



ऋषभ कला प्रदर्शन 64 और 72 कलाएँ

राजा ऋषभ द्वारा बताई गई 64 और 72 कलाओं पर मॉडल की प्रस्तुति



कला प्रदर्शनी
₹11 लाख तक के पुरस्कार

श्रेणी 1

12 से 17 वर्ष
स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थी

श्रेणी 2

18 से 25 वर्ष
स्कूल, कॉलेज और संस्थाओं के विद्यार्थी

श्रेणी 3

पारंपरिक शिक्षा केंद्र
धार्मिक और गुरुकुल पाठशालाओं के विद्यार्थी

ऋषभायन 3 · 27-29 नवंबर 2026 · नवलखी मैदान, वडोदरा

64 स्त्री कलाएँ

राजा ऋषभ द्वारा बताई गई 64 स्त्री कलाएँ, वर्ग के अनुसार



श्रृंगार, सौंदर्य और वस्त्र कलाएँ

- 1 वेश रचना कला — अवसर के अनुसार शालीन वस्त्र पहनना
- 2 आभूषण संयोजन कला — सही गहने चुनकर सुरुचि से पहनना
- 3 केश प्रसाधन कला — बाल संवारना और चोटी-जूड़े बनाना
- 4 अंगराग कला — उबटन और प्राकृतिक लेप से त्वचा निखारना
- 5 विशेषक च्युति कला — माथे पर तिलक, कुमकुम और बिंदी लगाना
- 6 सुगंध युक्ति कला — इत्र, चंदन जैसे सुगंधित द्रव्य बनाना
- 7 अंजन विधि कला — आँखों के लिए औषधीय काजल बनाना
- 8 लीलासंचरण कला — छटा और लालित्य भरी चाल से चलना
- 9 हेमरत्नभेद कला — सोने और रत्नों के असली-नकली की परख कर मूल्य आँकना



गृह सज्जा और ललित कलाएँ

- 10 चित्रकला — दीवार, कपड़े या बर्तन पर चित्र और बेल-बूटे बनाना
- 11 रंगोली (तंडुल-कुसुम-बत्ति) कला — रंगीन चावल, आटे और फूलों से रंगोली बनाना
- 12 पुष्पास्तरण कला — कमरे और बिस्तर को फूलों से सजाना
- 13 माल्य ग्रथन कला — फूलों की तरह-तरह की मालाएँ गूँथना
- 14 गृह सुरक्षा कला — घर को साफ और सुरक्षित रखना
- 15 वास्तुसिद्धि कला — वास्तु के अनुसार भूमि चुनकर घर की रचना करना



हस्तशिल्प और सुई-धागे का काम

- 16 सिलाई कला — कपड़े सिलना और उनकी मरम्मत करना
- 17 कढ़ाई (कसीदाकारी) कला — कपड़े पर धागों से डिजाइन काढ़ना
- 18 बुनाई कला — ऊन या सूत से वस्त्र और आसन बुनना
- 19 काष्ठ कला (काठ का काम) — लकड़ी के खिलौने और बर्तन बनाना
- 20 धागा क्रीड़ा (सूत्र-क्रीड़ा) — धागों से गुड़िया और झूलने वाले खिलौने बनाना
- 21 कागज/पत्ता कतरन कला — कागज या पत्ते काटकर आभूषण और खिलौने बनाना
- 22 मिट्टी शिल्प कला — मिट्टी के बर्तन और कलाकृतियाँ बनाना
- 23 हस्तलाघव कला — हाथ की फुर्ती: हाथ की सफाई और तेज कारीगरी



संगीत, नृत्य और अभिनय

- 24 गायन कला — पारंपरिक गीत और भजन गाना
- 25 वादन कला — वीणा, बांसुरी, ढोलक जैसे वाद्य बजाना
- 26 नृत्य कला — भावपूर्ण नृत्य करना
- 27 अभिनय (नाट्य) कला — हाव-भाव और संवाद से मंच पर कहानी प्रस्तुत करना
- 28 जलतरंग (उदक वाद्य) कला — पानी से भरे बर्तनों को बजाकर संगीत निकालना
- 29 लय-ताल ज्ञान — संगीत और नृत्य में लय-ताल बनाए रखना
- 30 वीणानाद कला — प्राचीन तंतुवाद्य वीणा बजाना



पाक कला और पेय विज्ञान

- 31 भोजन निर्माण कला — स्वादिष्ट, सात्विक और पौष्टिक भोजन पकाना
- 32 पाक कला विविधता — मिठाइयाँ और तरह-तरह के व्यंजन बनाना
- 33 पानक रस कला — फलों और जड़ी-बूटियों से शर्बत-काढ़े बनाना
- 34 अन्न संरक्षण कला — अनाज, अचार आदि लंबे समय तक सुरक्षित रखना
- 35 शालिखण्डन कला — धान कूटकर साफ और साबुत चावल निकालना



बौद्धिक खेल, भाषा और मनोरंजन

- 36 अक्षर ज्ञान कला — पढ़ने-लिखने का बुनियादी ज्ञान
- 37 पहेली (प्रहेलिका) कला — पहेलियाँ बूझना और नई पहेलियाँ बनाना
- 38 काव्य समस्या पूर्ति — अधूरी कविता अपनी सूझ से पूरी करना
- 39 शतरंज/चौसर कला — शतरंज, चौसर जैसे बुद्धि के खेल खेलना
- 40 कथा वाचन कला — धार्मिक, नैतिक और रोचक कहानियाँ सुनाना
- 41 भाषा चातुर्य — मीठी, विनम्र और प्रभावशाली वाणी
- 42 विनोद कला — हल्के हास्य से घर में आनंद बनाए रखना
- 43 संस्कृतजल्प कला — संस्कृत में शुद्ध और धाराप्रवाह वार्तालाप
- 44 व्याकरण कला — शुद्ध भाषा के नियमों और शब्द-रचना का ज्ञान
- 45 सर्वभाषाविशेष कला — अनेक भाषाओं और बोलियों का ज्ञान
- 46 अन्त्याक्षरिका कला — श्लोकों की अंत्याक्षरी: अंतिम अक्षर से नया श्लोक सुनाना



चिकित्सा, बालकल्याण और पारिवारिक प्रबंधन

- 47 बाल चिकित्सा (बाल-कल्याण) — बच्चों की देखभाल, स्वास्थ्य और संस्कार
- 48 प्राथमिक उपचार कला — घरेलू जड़ी-बूटियों से प्राथमिक इलाज करना
- 49 सफाई एवं स्वच्छता कला — घर और शरीर को कीटाणुमुक्त और स्वच्छ रखना
- 50 सेवक प्रबंधन कला — घर के सहायकों से सम्मानपूर्ण व्यवहार और काम की व्यवस्था
- 51 अतिथि सत्कार कला — मेहमानों का आदर-सत्कार और सुविधा का ध्यान रखना
- 52 बजट प्रबंधन (आय-व्यय ज्ञान) — सीमित आय में घर चलाना और बचत करना
- 53 अंकविचार कला — अंक, स्थानीय मान और रोजमर्रा का गणित
- 54 वाणिज्यविधि कला — क्रय-विक्रय, माल और भाव की परख तथा हिसाब
- 55 गृहाचार कला — परिवार के रीति-रिवाज के अनुसार घर चलाना



सामाजिक, व्यावहारिक और अन्य विशिष्ट कलाएँ

- 56 पशु-पक्षी पालन — गाय, तोता जैसे पशु-पक्षियों को समझना और पालना
- 57 बागवानी (उद्यान कला) — आँगन में फल, फूल और औषधीय पौधे उगाना
- 58 शकुन ज्ञान — बादल और पक्षियों को देखकर मौसम का अनुमान लगाना
- 59 धैर्य कला — संकट में शांत रहकर परिवार को ढाढ़स बँधाना
- 60 क्षमा कला — गलतियाँ माफ कर घर में शांति बनाए रखना
- 61 सत्य भाषण कला — हमेशा सत्य और प्रिय बोलना
- 62 सहानुभूति कला — दूसरों के सुख-दुःख समझकर मदद करना
- 63 हयगजपरीक्षण कला — घोड़े और हाथी की नस्ल, आयु और लक्षणों की परख
- 64 लोकव्यवहार कला — हर अवसर पर लोगों के साथ विवेक से व्यवहार करना

72 पुरुष कलाएँ

राजा ऋषभ द्वारा बताई गई 72 पुरुष कलाएँ, वर्ग के अनुसार



भाषा, लेखन और बौद्धिक कलाएँ

- 1 **लेख कला** — अक्षर और 18 प्रकार की लिपियाँ लिखने का ज्ञान
- 2 **गणित कला** — हिसाब-किताब और गणना करने की विद्या
- 3 **बुद्धि कला** — तीव्र बुद्धि और विवेक का प्रयोग
- 4 **वाच्य कला** — स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से बोलना
- 5 **विचार कला** — गहन सोच-विचार और सही निर्णय लेना
- 6 **तर्क कला** — वाद-विवाद, तर्क और कुतर्क को समझने की शक्ति
- 7 **न्याय कला** — उचित और निष्पक्ष न्याय करने का ज्ञान
- 8 **तत्व विचार कला** — दार्शनिक तत्वों का गहराई से मनन करना
- 9 **काव्य कला** — सुंदर कविताओं की रचना करना
- 10 **छंद कला** — काव्यों में छंद, मात्रा और लय बिठाना
- 11 **षट् भाषा कला** — छह प्रमुख प्राकृत/लोक भाषाओं को जानने की कला



संगीत और ललित कलाएँ

- 12 **गीत कला** — सुरीला गायन और संगीत की समझ
- 13 **वाद्य कला** — तरह-तरह के वाद्य यंत्र (जैसे वीणा, सितार) बजाना
- 14 **नृत्य कला** — शास्त्रीय और भावपूर्ण नृत्य करना
- 15 **ताल कला** — संगीत में ताल और रिदम (लय) को संभालना
- 16 **ढोल कला** — ढोल या नगाड़ा बजाने की विशेष कला
- 17 **मृदंग कला** — मृदंग जैसे पारंपरिक थाप वाले यंत्र बजाना
- 18 **भेरी कला** — युद्ध या उत्सव के समय भेरी (बिगुल/तुरही) बजाना
- 19 **बांसुरी कला** — सुरीली बांसुरी वादन की कला
- 20 **स्वरगत कला** — विभिन्न राग-रागिनियों में सही स्वर निकालने का ज्ञान
- 21 **पुष्करगत कला** — पुष्कर नामक विशेष प्राचीन वाद्य का वादन
- 22 **चित्र कला** — सुंदर चित्रकारी और रेखाचित्र बनाना
- 23 **नेपथ्य कला** — रंगमंच (Stage) की सजावट और भेष बदलना



युद्ध, व्यूह और शस्त्र कलाएँ

- 24 **व्यूह कला** — युद्ध के लिए सेना की व्यूह-रचना: पैदल, हाथी, घुड़सवार और रथों को निश्चित आकारों में सजाना
- 25 **प्रतिव्यूह कला** — शत्रु के व्यूह का सामना करने, उसे झेलने और तोड़ने के लिए अपनी सेना सजाना
- 26 **चक्रव्यूह कला** — मजबूत केंद्र के चारों ओर घेरों में सेना सजाना, जिससे निकलना कठिन हो
- 27 **गरुड़ व्यूह कला** — चोंच, धड़ और पंखों सहित गरुड़ के आकार में सेना सजाना
- 28 **शकटव्यूह कला** — गाड़ी के आकार में सेना सजाना
- 29 **स्कंधावारमान कला** — सेना के शिविर का माप और योजना: आकार, विभाग, मार्ग, द्वार और रक्षा-व्यवस्था
- 30 **युद्ध कला** — रणभूमि में शस्त्रों से, पैदल या सवारी पर लड़ने का कौशल
- 31 **नियुद्ध कला** — निकट की लड़ाई: आमने-सामने शरीर से, प्रायः बिना शस्त्र, पकड़कर और प्रहार करके लड़ना
- 32 **मुष्टियुद्ध कला** — मुक्केबाजी: बंद मुट्ठी से प्रहार और बचाव करते हुए आमने-सामने लड़ना
- 33 **बाहुयुद्ध कला** — कुशती: भुजाओं से पकड़कर, उठाकर, पटककर और दबाकर प्रतिद्वंद्वी को हराना
- 34 **इषुशास्त्र कला** — बाण और अस्त्रों की विद्या: तीर, भाले जैसे फेंकने के शस्त्र पहचानना, साधना और छोड़ना

- 35 **छरुप्रवाद कला** — तलवारबाजी: मूठ पकड़ने से लेकर वार करने, भोंकने और बचाव तक तलवार की विद्या
- 36 **धनुर्वेद कला** — धनुष की विद्या: तीरंदाजी, और व्यापक अर्थ में शस्त्रों तथा युद्ध की पूरी कला



गृह, विलास और मनोरंजन कलाएँ

- 37 **शौच कला** — मन और शरीर को शुद्ध व स्वच्छ रखने की कला
- 38 **विनोद कला** — हास्य-व्यंग्य और दूसरों का मनोरंजन करना
- 39 **विलास कला** — सुरुचिपूर्ण जीवन और आनंद उठाने का ढंग
- 40 **क्रीडन कला** — विभिन्न प्रकार के खेल खेलना
- 41 **धूत कला** — पांसे (Dice) का खेल और उसकी चालें
- 42 **अष्टापद कला** — चौसर या शतरंज जैसे दिमागी खेल खेलना
- 43 **हस्तलाघव कला** — हाथों की सफाई (सिलाई या कारीगरी की फुर्ती)
- 44 **कुसुम कला** — फूलों से मालाएँ गूँथना और शृंगार करना
- 45 **अंजन कला** — आँखों में लगाने वाले अंजन (काजल) का निर्माण
- 46 **वशीकरण कला** — मधुर व्यवहार से दूसरों को प्रभावित करना
- 47 **संयोग कला** — विभिन्न वस्तुओं या जड़ी-बूटियों का सही मिश्रण करना
- 48 **स्नेह कला** — तेल, घी और औषधीय तैलों का शोधन करना
- 49 **वस्त्र विधि कला** — कपड़े बुनने और उन्हें रंगने की कला
- 50 **अन्न विधि कला** — स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन पकाना (पाक कला)
- 51 **पान विधि कला** — फल और जड़ी-बूटियों से शर्बत व पेय बनाना



विज्ञान, व्यापार और तकनीकी कलाएँ

- 52 **कृषिकरण कला** — उन्नत खेती और अनाज उगाना
- 53 **वास्तु कला** — भवन, मकान और नगरों का निर्माण (Architecture)
- 54 **धातुवाद कला** — सोने-चाँदी आदि धातुओं को पिघलाना और शुद्ध करना
- 55 **स्वर्ण पाक कला** — कच्चे सोने को तपाकर गहने बनाने योग्य बनाना
- 56 **रूप पाक कला** — चाँदी (रजत) को शुद्ध करने की वैज्ञानिक विधि
- 57 **रत्न लक्षण कला** — कीमती हीरों और रत्नों की शुद्धता परखना
- 58 **दक-मृत्तिका कला** — मिट्टी के बर्तन और खिलौने बनाना (Pottery)
- 59 **रज्जुबंध कला** — मजबूत रस्सियाँ बटना और गाँठें लगाना
- 60 **ज्योतिष कला** — ग्रहों और नक्षत्रों की चाल का अध्ययन
- 61 **वैद्यक कला** — आयुर्वेद, नाड़ी ज्ञान और रोगों का उपचार (चिकित्सा)
- 62 **चार वेद कला** — तत्कालीन सांसारिक ज्ञान-विज्ञान के संचय को समझना



गुप्त शक्तियाँ, लक्षण और अन्य विद्याएँ

- 63 **मंत्र कला** — ध्वनि तरंगों (मंत्रों) की गुप्त शक्ति का ज्ञान
- 64 **दृष्टिवाद कला** — केवल नजरों से वस्तुओं या परिस्थितियों को भाँपना
- 65 **इंद्रजाल कला** — हाथ की सफाई से जादुई करतब दिखाना
- 66 **शकुन कला** — पशु-पक्षियों की हरकतों से भविष्य के संकेत समझना
- 67 **स्वप्न कला** — देखे गए सपनों का सही फल और अर्थ बताना
- 68 **स्त्री लक्षण कला** — स्त्रियों के शारीरिक और मानसिक सद्गुणों को पहचानना
- 69 **पुरुष लक्षण कला** — पुरुषों के हाव-भाव और उत्तम लक्षणों को परखना
- 70 **बंधन कला** — अपराधियों या दुश्मनों को बांधने की तकनीक
- 71 **स्तम्भन कला** — किसी गतिमान वस्तु या दुश्मन को एक जगह रोक देना
- 72 **संजीवन कला** — मूर्छित या मरणासन्न व्यक्ति को प्राथमिक उपचार से पुनर्जीवित करना

ऋषभ कला प्रदर्शन

भाग लेने के नियम और मार्गदर्शिका

ऋषभायन 3 | 27 से 29 नवंबर, 2026 | नवलखी मैदान, वडोदरा

1. परियोजना के बारे में

ऋषभ कला प्रदर्शन का उद्देश्य विद्यार्थियों द्वारा ऐसे कार्यशील मॉडल प्रस्तुत करना है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System), भारतीय परंपरा और भारतीय संस्कृति को आधुनिक युग से जोड़ें।

प्रत्येक मॉडल आधिकारिक रूप से दी गई कला सूची में से आवंटित एक कला पर आधारित होना चाहिए। ये मॉडल ऋषभायन 3 के दौरान आयोजित होने वाली प्रदर्शनी में प्रस्तुत किए जाएंगे।

2. भागीदारी की श्रेणियाँ

श्रेणी 1 12 से 17 वर्ष के विद्यार्थी

स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थी

श्रेणी 2 18 से 25 वर्ष के विद्यार्थी

स्कूल, कॉलेज और संस्थाओं के विद्यार्थी

श्रेणी 3 पारंपरिक शिक्षा केंद्रों के विद्यार्थी

धार्मिक पाठशाला और गुरुकुल पाठशाला के विद्यार्थी

3. पंजीकरण शुल्क और रिफंड

- प्रत्येक प्रविष्टि (टीम) के लिए ₹500 पंजीकरण शुल्क देना होगा।
- मॉडल जमा करने के बाद प्रत्येक प्रविष्टि के लिए कुल ₹1,000 लौटाए जाएंगे। इसमें जमा किया गया ₹500 पंजीकरण शुल्क पूरा लौटाया जाएगा और अतिरिक्त ₹500 भी दिए जाएंगे।

4. मॉडल के लिए पात्रता और नियम

- प्रविष्टि केवल संस्था के माध्यम से ही स्वीकार की जाएगी, जैसे स्कूल, कॉलेज अथवा धार्मिक पाठशाला या गुरुकुल। व्यक्तिगत रूप से भेजी गई प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी।
- प्रत्येक संस्था अधिकतम दो प्रविष्टियाँ प्रस्तुत कर सकती है।
- प्रत्येक प्रविष्टि में कम से कम 2 और अधिकतम 5 विद्यार्थियों की टीम होनी चाहिए।

5. कला का चयन

- प्रत्येक मॉडल आधिकारिक सूची में से चुनी गई एक कला पर आधारित होना चाहिए।

6. मॉडल संबंधी मार्गदर्शिका

- मॉडल मिट्टी, सजावटी सामग्री अथवा अन्य उपयुक्त सामग्री का उपयोग करके तैयार करना होगा।
- मॉडल का आकार अधिकतम 2 x 2 x 2 फुट (लंबाई x चौड़ाई x ऊँचाई) होगा।
- प्रत्येक मॉडल भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय परंपरा और भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहित करने वाला होना चाहिए।
- प्रत्येक मॉडल के साथ टीम के विद्यार्थियों के नाम और उनकी संस्था का नाम दर्शाना होगा।

7. प्रदर्शनी में विद्यार्थियों की उपस्थिति

- भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों का 29 नवंबर, 2026 को प्रदर्शनी में उपस्थित रहना अनिवार्य है।
- विद्यार्थियों को अपने मॉडल के बारे में निर्णायकों को समझाना होगा।

8. मूल्यांकन के मापदंड

मॉडल का मूल्यांकन निम्नलिखित मुख्य सिद्धांतों के आधार पर किया जाएगा:

- मॉडल की प्रस्तुति में आधुनिक दृष्टिकोण और वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता मुख्य मापदंड होंगे।
- जिस मॉडल में प्राकृतिक वस्तुओं का अधिक उपयोग किया गया हो, उसे मूल्यांकन में प्राथमिकता दी जाएगी।

9. मॉडल जमा करने के नियम

- मॉडल जमा करने का दिन और समय: 26 नवंबर, 2026, दोपहर 12 से 3 बजे तक।
- मॉडल जमा करने का तरीका: संस्था के संयोजक के माध्यम से स्वयं उपस्थित होकर जमा करना होगा।
- मॉडल जमा करने का स्थान: नवलखी मैदान, वडोदरा।
- प्रत्येक मॉडल पर संस्था का नाम, टीम के सभी सदस्यों के नाम और चुनी गई कला का नाम स्पष्ट रूप से लिखा होना चाहिए।
- मॉडल 29 नवंबर, 2026 को शाम 7 बजे के बाद वापस ले जाना होगा।

10. पुरस्कार और प्रमाणपत्र

- प्रत्येक श्रेणी में प्रथम, द्वितीय और तृतीय - ये तीन पुरस्कार दिए जाएंगे और अन्य 30 सात्वता पुरस्कार होंगे। **पुरस्कार राशि संबंधित संस्था, स्कूल या कॉलेज को दी जाएगी।**
- प्रमाणपत्र दिए जाएंगे।
- विजेताओं का निर्णय केवल निर्णायक समिति का ही होगा।
- कुल ₹11 लाख तक के पुरस्कार नियमों और शर्तों के अधीन हैं।

11. पंजीकरण कैसे करें

- पहले पंजीकरण लिंक के माध्यम से पंजीकरण करना होगा।
- पंजीकरण के बाद लगभग 4 से 10 दिनों में मॉडल के लिए दूसरी लिंक भेजी जाएगी। उसमें टीम किस कला पर मॉडल बनाएगी, यह स्वयं भरना होगा।
- पंजीकरण लिंक और QR कोड:

rushabhayan.org/rushabh-kala-pradarshan

संपर्क (फोन करने का समय: शाम 6 से रात 9)



पंजीकरण के लिए स्कैन करें

भाविन शाह	99332 03211
अक्षता जैन	87966 07431
तेजस शाह	86554 49618
उदितभाई शाह	70168 76080
ऋषांगभाई शाह	98799 82245
कौशिकभाई शाह	94288 20485

नोट: इस प्रतियोगिता के किसी भी नियम में आवश्यकता होने पर परिवर्तन करने का पूर्ण अधिकार आयोजक संस्था का रहेगा।

आयोजक संस्था

लब्धि विक्रम जनसेवा ट्रस्ट

ऋषभायन 3, ऋषभ कला प्रदर्शन